Physical Divisions of India

भारत अनेकताओं में एकता का देश है। यहाँ की जलवायु, वनस्पति, मिट्टी, प्रजाति, भाषा, धर्म इत्यादि विविधता से भरपूर हैं। क्षेत्रफल की दृष्टि से यह विश्व का 7वाँ व जनसंख्या की दृष्टि से दूसरा बड़ा देश है। यह [illegible] अक्षांश से लेकर 37°6' उत्तरी अक्षांश तक तथा [illegible] देशान्तर से लेकर 97°25' पूर्वी देशान्तर के बीच स्थित है। 82°30' पूर्वी देशान्तर रेखा इसके बीचों बीच गुजरती है। भारत की विशाल भूरचना इसके धरातलीय बनावट को अधिक जटिल बनाती है। यहाँ कहीं गगनचुंबी पर्वत हैं तो कहीं विशाल मैदान, कहीं [illegible] भूमि वाले पठार। कहीं शुष्क मरुस्थल हैं, तो कहीं सघन वन। भौतिक एवं भौगोलिक दृष्टिकोण से भारत को 4 भागों में बाँटा जा सकता है —

1. उत्तरी पर्वतीय प्रदेश   2. प्रायद्वीपीय पठार
3. उत्तर का मैदान   4. समुद्रतटीय मैदान

1. उत्तरी पर्वतीय प्रदेश →

हिमालय पर्वत भारत की उत्तरी सीमा में प. से पूर्व की ओर 2400 Km. लम्बाई में एक वृहत चाप के आकार में फैला है। इसकी चौड़ाई 150 से 400 Km. तथा ऊँचाई 6000 m. है। यह पूर्वी भाग में 1500 m. है [illegible] भाग में 8000 m. ऊँचा है। वास्तव में हिमालय पर्वत कई पर्वत श्रेणियों से मिलकर बना है। भौगोलिक दृष्टि से हिमालय को 4 श्रेणियों में बाँटा गया है :— ① महान या आन्तरिक हिमालय ② लघु हिमालय या हिमाचल श्रेणी ③ उप हिमालय या शिवालिक श्रेणी ④ ट्रांस हिमालय या तिब्बत हिमालय श्रेणी

① महान या आन्तरिक हिमालय ⇒

यह सबसे उत्तरी श्रेणी है। इन्हें हिमाद्रि, महाहिमालय, नग्न हिमालय अथवा [illegible] हिमालय भी कहा जाता है। यह सिन्धु नदी के मोड़ से लेकर ब्रह्मपुत्र नदी के मोड़ तक 2400 Km. तक [illegible] की भाँति फैला हुआ है। इसकी चौड़ाई 25 Km. है औसत ऊँचाई

6000 m. है। यहाँ की मुख्य चोटियाँ हैं:- माउण्ट एवरेस्ट या गौरीशंकर, नन्दा देवी, नंगा पर्वत, गोसाईथान, कंचनजंघा, मकालू, अन्नपूर्णा, धौलागिरि इत्यादि। इसी श्रेणी के मध्यवर्ती भाग से गंगा, यमुना व उसकी सहायक नदियाँ निकलती हैं। विवर्तनिक दृष्टि से ये कई सक्रिय हैं जो अभी भी ऊँचे उठ रहे हैं। हिमालय के core में प्राचीन कठोर चट्टानें जिनमें ग्रेनाइट, नीस व शिस्ट हैं जबकि इसके पार्श्ववर्ती भाग में अवसादी चट्टानें हैं। महान हिमालय के महत्वपूर्ण दर्रे हैं:- बुर्जिल एवं जोजीला (J.K), शिपकीला, बड़ा-लापचा (H.P) माना ला, लीपू लेख ला (उत्तराखण्ड) नाथूला, जेलेपला (सिक्किम) बोमडीला (अरुणाचल प्रदेश)

(2) लघु हिमालय या हिमाचल श्रेणी →

यह श्रेणी महान हिमालय के समानान्तर उसके दक्षिण में फैला है। इसकी चौड़ाई 80-100 Km. है। इसकी औसत ऊँचाई 1828-3000 m. तक तथा अधिकतम ऊँचाई 4500 m. है। यहाँ की मुख्य श्रेणियाँ धौलाधर (हि.प्र.) पीरपंजाल (कश्मीर) महाभारत लेख (नेपाल) चूरिया व मसूरी प्रमुख हैं। यहाँ कई प्रसिद्ध स्वास्थ्यवर्द्धक स्थान रानीखेत, अल्मोड़ा, शिमला, मसूरी, नैनीताल, डलहौजी, दार्जिलिंग इत्यादि इसके निचले भाग में स्थित हैं। यहाँ की चट्टानें बहुत पुरानी हैं। यह विवर्तनिक दृष्टि से शान्त है। यहाँ कोणधारी वन मिलते हैं। यहाँ पर्वतीय ढालों में छोटे-छोटे घास के मैदान पाए जाते हैं जिन्हें कश्मीर में मर्ग (गुलमर्ग, सोनमर्ग), उत्तराखंड में बुग्याल व पयार, तथा मध्यवर्ती भाग में दुआर एवं दून के नाम से जाना जाता है।

महान हिमालय एवं लघु हिमालय के बीच विशाल सीमान्त दरार या great boundary fault स्थित है।

(3) उप हिमालय या शिवालिक श्रेणी →

इसे बाह्य हिमालय भी कहते हैं। यह लघु हिमालय के दक्षिण में फैला है। यह पोटवार बेसिन से प्रारंभ होकर कोसी नदी तक फैली है। यह 2000 Km. लम्बी व 40-50 Km

Scanned with CamScanner

PAGE NO.:
DATE: / /

चौड़ी है। प० में यह ज्यादा चौड़ी है पूर्व में इसकी चौड़ाई मात्र 15 km है। इसकी औसत ऊँचाई 1200 m है। यह हिमालय का सबसे नवीन भाग है। यहाँ कम्पानीमा बराबर, तंग ढाल, गहरी घाटियाँ जिनकी दीवारों में दरार पायी जाती है। इसे गोरखपुर के पास डुंडवा पूर्व की ओर चूरिया व मुरिया आदि नामों से जाना जाता है। ~~कि~~ शिवालिक व लघु हिमालय को अलग करने वाली घाटियों को प० में दून व पूर्व में द्वार कहते हैं। इसका संपूर्ण पर्वतपदीय भाग दलदली व वनाच्छादित है। लघु व शिवालिक हिमालय के बीच एक समान्तर दरार है। शिवालिक को जम्मू में जम्मू पहाड़ी, अरुणाचल प्रदेश में डफला, मिरी, व मिशमी पहाड़ी के नाम से जाना जाता है।

(4) ट्रांस या तिब्बत हिमालय श्रेणी →

यह महान हिमालय के उत्तर व तिब्बत के दक्षिण में स्थित है। पूर्व व प० में यह 40 km तथा मध्य में 225 km चौड़ी है। इसकी लम्बाई 960 km है। तथा औसत ऊँचाई 4100 से 5700 m ऊँचा है। यहाँ शीत कटिबंधीय जलवायु मिलती है। इस ~~श्रे~~ श्रेणी में कई दर्रे हैं जिनकी ऊँचाई 5200 m है। इनमें डिंगला दर्रे की ऊ० 5795 m से अधिक है।

प्रादेशिक वर्गीकरण

सिडनी बुराड महोदय ने हिमालय ~~का~~ पर्वत का 4 प्रमुख प्रादेशिक ~~वि~~ वर्गीकरण किया है:—
(1) पंजाब हिमालय (2) कुमायूं हिमालय (3) नेपाल हिमालय (4) असम हिमालय

(1) पंजाब हिमालय →

यह सिन्धु से लेकर सतलज नदी तक 560 km लम्बी है। इसका क्षेत्रफल 45000 वर्ग km है। हिमालय की सर्वाधिक चौड़ाई यहीं मिलती है। यहाँ की मुख्य चोटियाँ टाटाकुटी व ब्रह्मासकल है। मुख्य दर्रे हैं — पीरपंजाल, बोटागली, उरपुर चोरगली, जामीर, बनिहाल, गुलाबघर, जोजिला, बुर्जिल आदि। इसका उत्तरी ढाल निर्जन, ऊबड़ खाबड़ व शुष्क है जिनके बीच में पठार व झीलें जिनमें मानसरोवर, राकसताल इत्यादि है।

Scanned with CamScanner

दक्षिणी ढाल अधिक कटा फटा है वनाच्छादित है।

(2) कुमायूँ हिमालय →

यह सतलज नदी से काली नदी के बीच 320 km. लम्बी है। यह 38,000 वर्ग km. क्षेत्रफल में फैला है। यहाँ की प्रमुख चोटियाँ :- बद्रीनाथ, केदारनाथ, त्रिशूल, माना, गंगोत्री, नन्दादेवी, कामेत, जाओनली व शिवलिंग है। कुमायूँ हिमालय अधिकतर रवेदार स्फटिक चट्टानों से बनी है। माना व नीति दर्रों द्वारा यह तिब्बत से जुड़ा है।

(3) नेपाल हिमालय →

यह काली व तिस्ता नदी के बीच 800 km. के लम्बाई में फैला है। इसका क्षेत्रफल लगभग 1,16,800 वर्ग km. है। इसे सिक्किम में सिक्किम हिमालय, प.बंगाल में दार्जिलिंग हिमालय तथा भूटान में भूटान हिमालय कहते हैं। इनकी औसत ऊँचाई 6250 m. है। यहाँ भारत की सबसे ऊँची चोटियाँ अन्नपूर्णा प्रथम, धौलागिरि, गोसाईंथान, कंचनजंघा, चोमू, मकालू व एवरेस्ट स्थित हैं। यहाँ कोणधारी वन मिलते हैं।

(4) असम हिमालय → तिस्ता नदी से लेकर ब्रह्मपुत्र नदी तक यह 720 km. की लम्बाई में फैला है। इसका क्षेत्रफल 67,500 वर्ग Km है। इसका ढाल दक्षिण में तेज है उत्तर-पश्चिम में क्रमशः धीमा होता चला जाता है। यहाँ की मुख्य चोटियाँ :- कुलाकांगड़ी, चुमलहारी, कावरु, जोंग सांगला व पौहुनी है। यह श्रेणी नेपाल हिमालय की अपेक्षा नीची है।

इस हिमालय को असम में रहने वाली जनजातियों के आधार पर कई उपविभागों में बाँटा गया है जिनमें आका पहाड़ियाँ, धनसीरी, दफला पहाड़ियाँ, मिशमी पहाड़ियाँ, कोहिमा पहाड़ियाँ, उत्तरी कछार पहाड़ियाँ, मिजो पहाड़ियाँ, खासी, जयन्तिया, मिकिर आदि हैं जिनमें जनजातियों का निवास है।

Scanned with CamScanner